विषय सूची

क्र सं	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	हि.प्र. में भेड़ पालन का परिचय	1
2.	भेड़ प्रबंधन	2-3
3.	भेड़ पालकों को अच्छे भेड़ प्रबंधन हेतु सुझाव	4-7
4.	चारागाह सुधार हेतु सुझाव	8
5.	प्रदेश की भेड़ो का नस्ल सुधार	9-10
6.	भेड़-बकरियों की मुख्य बीमारियां व उनको रोकथाम	11-18
7.	भेड़ों के परजीवी रोग एंव उनकी रोकथाम	19-23
8.	भेड़-बकरियों में टीकाकरण समय सारणी	24
9.	राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर0 के वी0 वाई0) के अन्तर्गत भेड़ व बकरियों को परिजीवि रोगों से बचाव हेतु परियोजना	25
10.	रोगों से बचाव हेतु सुझाव	26-27
11.	केन्द्रीय भेड़ पालक बीमा योजना	28
12.	एकीकृत उन सुधार विकास कार्यक्रम	29
13.	भेड़ पालक समृद्धि योजना	30
14.	आस्ट्रेलिया में भेड़ पालन	31

हिमाचल प्रदेश में भेड़ पालन का परिचय

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय एंव दुर्गम क्षेत्र के लोग सदियों से भेड़-बकरी पालन कर रहे हैं। इन क्षेत्रों की भगौलिक परिस्थितियां एंव सांस्कृतिक जरूरतों के कारण भेड़-बकरी पालन इन क्षेत्रों के लोगों का मुख्य पेशा था, लेकिन बदलते परिवेश में इन क्षेत्र के लोगों के साथ-साथ प्रदेश के अन्य क्षेत्र के कई लोगों ने भी इस पेशे को एक व्यवसाय के रूप में अपनाना शुरू किया है । वर्तमान में प्रदेश के लगभग 20000 परिवार पूर्ण रूप से इस व्यवसाय को अपनाकर अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं । प्रदेश में दो स्थानीय भेड़ों की नस्लें गद्दी एंव रामपुर बुशैहरी व गद्दी नस्ल की बकरी हैं । 1960 के दशक में प्रदेश सरकार ने कुछ विदेशी नस्लें जैसे रशियन मैरिनों, रैम्बूले, पोलबर्थ तथा कोरिडेल आदि विदेशों से आयात कर नस्ल सुधार हेतु क्रास ब्रिड़िंग कार्यक्रम अपनाकर पूरे प्रदेश में दोगली नस्लों को बढ़ावा दिया जिससे कि इस व्यवसाय से जुड़े भेड़ पालकों को ज्यादा उत्पादन मिलना शुरू हुआ तथा उनके जीवन स्तर में तीव्र गति से विकास हुआ । प्रदेश में भेड़ पालन मुख्यत घुमन्तु / प्रवासी किस्म का है जिसमें प्रदेश में जनजातीय एंव उपरी क्षेत्रों के भेड़ पालक सर्दियों में अपनी भेड़-बकरियों को प्रदेश के मैदानी ईलाकों जैसे कांगड़ा, ऊना, बिलासपुर, हमीरपुर, सिरमौर तथा पड़ोसी राज्यों के सीमावर्ती ईलाकों में ले जाते हैं, तथा इन ईलाकों में सर्दियों का मौसम काटने के उपरान्त गर्मियां शुरू होते ही मार्च-अप्रैल में वापिस अपने निजी क्षेत्र के ऊंचे पहाड़ों की ओर पलायन करते हैं । जबकि प्रदेश के निचले क्षेत्र के लोग घरों पर ही 12 महीने औसतन 1-10 भेड़-बकरियां पालते हैं । घुमन्तु भेड़ पालक के रेबड/ धण में औसतन 250-400 तक भेड़-बकरियां होती हैं । प्रदेश में इस समय भेड़-बकरियों की संख्या 21 लाख के लगभग है जिसमें 9 लाख भेड़ें तथा 12 लाख बकरियां है, यह प्रदेश के कुल पशुधन का 40% है। इस व्यवसाय में आमदनी के कई साधन हैं जैसे ऊन, मांस, चमड़ा, दूध व खाद। कुल आमदनी का लगभग 10% भाग ऊन से तथा बाकि 90% मांस व अन्य उत्पादों से होती है। प्रदेश सरकार इस व्यवसाय को ओर अधिक सुदृढ़ करने हेतु कई प्रकार की कल्याणकारी योजनाएं चला रही है ।

भेड़ प्रबंधन

भेड़ पालन व्यवसाय अपनाने हेतू अधिक पूंजी की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि भेड़ों के रख रखाव हेतू भेड़ पालकों को बहुमूल्य भवनों की आवश्यकता नहीं होती । भेड़ों का जीवन काल 11-12 वर्ष होता है तथा भेड़ आमतौर पर नौ महीने में पूर्ण रूप से व्यसक हो जाती है और एक वर्ष की आयु होने के वाद गर्भधारण करवाया जा सकता है । लेकिन प्रदेश के भेड़ पालकों की भेड़ें अच्छे रख-रखाव न होने की वजह से दो वर्ष की आयु होने पर ही गाभिन हो पाती हैं । इस तरह एक भेड़ अपने जीवन काल में 6-7 बच्चे देती है । भेड़ों में ऋतु काल की अवधि में 17-18 दिन की होती है तथा भेड़ें अधिकतर छोटे दिनों में (नवम्बर से मार्च) में ज्यादा प्रजनन करती हैं तथा गर्भावस्था 147 -150 दिन की होती है। देशी नस्लें प्राय: एक ब्यांत में एक ही मेमना देती है तथा दो मेमने इक्टठे देने की प्रतिशतता देशी नस्लों में 5-10 प्रतिशत के करीब है, जबकि विदेशी नस्लों की भेड़ों में दो मेमनें इक्टठे देने की प्रतिशतता 25-30 प्रतिशत है । अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि वे दोगली नस्ल की भेड़ें पालें जिससे की एक से अधिक बच्चे हर ब्यांत में प्राप्त हो । ।

नवजात मेमने की देखभाल

जिन भेड़ों की मेमने देने की अवधी पूर्ण हो गई हो (142 से 150 दिन) उन्हें झुंड/धण से अलग साफ, सुथरे व सूखे स्थान पर रखें तथा नवजात मेमनों के पैदा होते ही नाडू को नाभी से डेढ़ से दो ईंच नीचे बांधकर साफ कैंन्ची या बलेड से काटें तथा टिन्चर आयोडिन या बिटाडीन नामक दवाई लगायें । नवजात मेमने के पैदा होते ही उसके मुंह व नाक से झिल्ली हटाकर उसे भेड़ के आगे चाटने के लिए रखें । भेड़ के थनों को लाल दवाई (पोटाश युक्त पानी) से साफ कर मेमनें को भेड़ का पहला दूध पिलायें, इस दूध में रोगों से लड़ने की क्षमता अधिक होती है, मेमना व भेड़ कम से कम एक सप्ताह तक चौबीस घण्टे एक साथ रहने चाहिए, इसके बाद मेमनें को सुबह व शाम मां का दूध पिलायें तथा जब मेमना एक माह का हो जाये तो दूध के साथ-साथ उसे नर्म हरी घास तथा दाना मिश्रण भी खिलाना शुरू करें । तीन महीने तक मेमने को भेड़/ मां के साथ रखें

तथा इसके बाद उसे मां से अलग कर दें । मेमनों को दो महीनों की आयु पर एनटीरोटोक्सीमियां का टीकाकरण करवाना सुनिश्चित करें तथा जहां पर जरूरत हो वहां पर भेड़ चेचक का टीकाकरण करवायें, मेमनों में पहली कृमिनाशक (पेट के कीड़ों की) दवाई दो से अढ़ाई महीने की आयु पर दें तथा इसके उपरान्त हर तीन-चार महीने के दौरान कृमिनाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार देना सुनिश्चित करवायें । वर्ष में कम से कम दो वार कीटनाशक स्नान भी अवश्य करवायें । मेमनों का शारीरिक भार 6-7 महीने पर कम से कम 25-30 किलो ग्रांम होना आवश्यक है जिसके लिए भेड़ पालकों को सलाह दी जाती है कि वे इसके लिए प्रत्येक मेमनों को उचित आहार तथा समय-समय पर कृमिनाशक दवाई व टीकाकरण भी करवाना सुनिश्चित करें ताकि मेमनों की मृत्यु दर 10 प्रतिशत से भी कम की जा सके व उनके अच्छे दाम मिल सकें ।

भेड़ों का रख-रखाव-

भेड़ों में कई प्रकार के छूत तथा अछूत रोग तथा परिजीवि रोग पाये जाते हैं। अत: इसलिए अच्छे भेड़ प्रबंधन व बिमारियों से नुकसान से बचाव हेतु समय-समय पर टीकाकरण कर लिया जाना चाहिए जिस हेतु टीकाकरण समय सारिणी पृष्ट संख्या 24 पर दी गई है।

इसके इलावा भेड़ों में बाह्य व अन्दर पाये जाने वाले परिजीवि रोगों पर विस्तृत रूप से इस किताब मे लिखा गया है तथा इसके बचाव हेतु भी पेट के कीड़ों की दवाई पिलानी/खिलाई जाये तथा साल मे 3 बार बाह्य परिजीवियों से बचाव हेतु कीटनाशक स्नान भी भेड़ों को करवाएं। ध्यान रहे कि यह पशु चिकित्सक की सलाह से करवाया जाये तथा दवाईयां पिलाने से प्राय: मींगणों की जांच भी नजदीकी पशु चिकित्सालय मे करवाएं जिससे सही दवाई दी जा सके।

याद रहे कि इलाज से बेहतर बचाव है

भेड़ पालको को अच्छे भेड़ प्रबंधन हेतू सुझाव

1. प्रदेश के अधिकतर भेड़ पालकों ने देशी नस्ल (गद्दी व रामपुर बुशेहरी) भेड़े पाली हैं अत: उन्हें सुझाव दिया जाता है कि वह दोगली नस्ल की भेड़ें पालें जिससे कि उन्हें देशी नस्लों की उपेक्षा अधिक ऊन व मांस प्राप्त होगा ।

(दोगली नस्ल की भेडों का चित्र)

2. भेड़ पालक आमतौर पर 150-200 भेड़ों पर एक नर मेंढ़ा रखते हैं, जिससे की प्रजनन काल में सभी प्रजनन योग्य भेड़ें गर्भित नहीं हो पाती । अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि हर 40-50 प्रजनन योग्य भेड़ों पर एक अच्छी नस्ल का नर मेढ़ा रखें । प्रदेश सरकार द्वारा पांच सरकारी भेड़ फार्म अलग-अलग जिलों सरोल (चम्बा), ताल (हमीरपुर) कड़छम (किन्नौर) ज्यूरी (शिमला) तथा मेंढ़ा फार्म नंगवाई (मण्डी) में स्थापित किये गये हैं जहां से भेड़ पालकों को प्रजनन एंव नस्ल सुधार हेतू योग्य मेंढ़े अनुदान राशि पर समय-समय पर उपलब्ध करवाए जाते हैं । अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि नस्ल सुधार हेतू वह इन सरकारी फार्मों से नस्ल सुधार एवं प्रजनन हेतू मेंढ़े लें।
3. बीजू मेंढा धण मे अधिक से अधिक 2 वर्षों के लिए ही रखा जाये तथा इसके उपरांत वह मेंढा अन्य भेड पालक से **अदला बदली** कर लिया जाये। आम तौर पर पाया जाता है कि भेड पालक एक मेढें को **चार-पांच साल** के लिए धण मे रखते हैं जिससे बहुत ज्यादा दुष्प्रभावों का सामना करना पडता है। इस तरह के प्रजनन को अन्तर प्रजनन बोलते हैं तथा इस तरह के प्रजनन से भेडों मे टेढी टांगें, वजन मे

गिरावट, आकार मे कमी **अनुवांशिक विकार** तथा उत्पादन की कमी इत्यादि का सामना करना पडता है जिससे आपके धणों को जो नुकसान हो जायेगा उसके बहुत ही दूरगामी प्रभाव पडते हैं। **इसलिए यह सुझाव भी है कि मेढें को अपने धण मे 2 साल तक ही रखें।**

4. अधिकतर भेड़ पालकों में यह धारणा है कि पहली बार जब भेड़ बच्चा देती है तो भेड़ पालक यह समझता है कि यदि इस बच्चे को पाला जाए या भेड़ के साथ रखा जाए तो भेड़ कमजोर होगी तथा ऐसी भेड़ अपने जीवन काल में अधिक ब्यांत नहीं दे पाएगी इसलिए भेड़ पालक उस बच्चे को एक से दो सप्ताह के भीतर ही बेच या मार देते है जोकि बिल्कुल गलत है, और कई भेड़ पालक मेमनों को 6-7 महीने तक भेड़ो के साथ रखते हैं, जिससे की भेड़ जल्दी (**फिर से**) गर्मी में नहीं आती हैं तथा वर्ष में केवल एक ही मेमने को जन्म दे पाती है । अत: भेड़ पालक को सुझाव दिया जाता है कि वह मेमने को तीन महीने के बाद भेड़ से अलग कर दें तथा भेड़ व मेमने का उचित रख-रखाव रखें जिससे की मेमना व भेड़ दोनों स्वस्थ रहेगें और भेड़ पालक को मुनाफा होगा ।

5. घुमन्तु भेड़ पालक प्राय: एक दिन में स्थानान्तरण के समय अपने झुंड के साथ 8-10 किलोमीटर का सफर तय करते हैं, ऐसे में कई बार गर्भधारण की हुई भेड़ों को उचित आहार व संम्भावित विश्राम नहीं मिल पाता है जिससे की गाभिन भेड़ों में गर्भपात होने की आशंका अधिक रहती है। अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि वह भेड़ प्रजनन के लिए ऐसे समय व चारागाह का चुनाव करें जिसमें गाभिन भेड़ों को अधिक सफर न करना पड़े, व उन्हें पौष्टिक आहार उचित मात्रा में उपलब्ध हो ।

6. अधिकतर भेड़ पालक नर मेमनों का बधियाकरण (खसी) चार-पांच महीने का होने पर स्वंय ही अपने देसी तरीके से करते हैं, जिससे की बधियाकरण करते समय अधिक खून निकलता है तथा कई बार कुछ जानवर मर भी जाते है और कईयों को उस जगह पर जख्म हो जाते हैं । अत: उन्हें सलाह दी जाती है कि वह नर मेमनों का

बधियाकरण स्वयं न कर मशीन द्वारा अपने नजदीकी पशु चिकित्सक / औषधियोजक से करवाऐं । तथा भेड़ पालक यह भी सुनिश्चित करें की बधियाकरण से कम से कम 15 दिन पहले मेमने को टेटनश टोओसोयोड नामक टीका आवश्य लगायें ताकि उनमें टेटनश नामक बीमारी न हो सके ।

7. प्रजनन योग्य मेंढ़ें चुनते समय भेड़ पालकों को कुछ बातों का जरूर ध्यान रखना चाहिए, जैसे कि प्रजनन योग्य मेंढ़े के शरीर की बनावट उसके पैरों का आकार तथा उसके अण्डकोश विकसित व शरीर के अनुपात के अनुसार होने चाहिए, जिन नस्लों में सींग होते हैं उनमें सींगों का आकार आदि भी देखना चाहिए, मेंढ़ें के कंधो के भाग की ऊन खोल कर देखनी चाहिए इस भाग में सबसे अच्छी ऊन पाई जाती है। मेंढ़ों की ऊन, ऊन की बिशेषता, रेशे की लम्बाई, ऊन का घनत्व, ऊन की मुलायमियत, ऊन का रंग व ऊन के चमकीलेपन पर भी ध्यान देना चाहिए । भेड़ पालक को जुड़वां पैदा हुए नर मेमनों से मेंढ़ा छाटंने में प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि ऐसे मेंढ़ों से गर्भित भेड़ों में अधिक जुड़वां बच्चे पैदा होगें । मेंढ़ों को प्रजनन के समय डेढ़ महीने तक भेड़ों के झुंड में रखें ।

8. प्रदेश के अधिकतर भेड़ पालक अपनी भेड़ों से साल में तीन बार (सितम्बर- अक्तूबर, दिसम्बर- जनवरी व मई -जून) ऊन लेते हैं, जिससे की ऊन के रेशे की लम्बाई कम होती है तथा भेड़ पालकों को उचित दाम नहीं मिल पाता । जबकि विदेशों में साल में एक बार ही भेड़ों से ऊन ली जाती हैं, ऐसी ऊन के रेशे की लम्बाई 8 से 10 सेंटीमीटर होती है, जिसका की बाजार में अच्छा दाम मिलता है। अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि वे साल में एक या दो बार(सितम्बर-अक्तूबर व मार्च-अप्रैल) में ही ऊन की कटाई करें ।

मशीन द्वारा भेड़ कलप्न के लाभ संक्षिप्त मे इस प्रकार से हैं:-

- भेड के शरीर से समानान्तर ऊन की कटाई
- ऊन की पैदावार मे वृद्धि
- समय का बचाव।
- भेड़ के लिए आरामदायक

9. कई बार भेड़ पालकों को प्राकृतिक आपदाओं जैसे आसमानी बिजली, भारी बर्फवारी या बारिश, ल्हासा गिरने आदि से उनकी भेड-बकरियों का अत्याधिक नुकसान होता है, ऐसी अवस्था में भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि नजदीकी पशु चिकित्सा संस्थानों / संम्बधित ग्राम पंचायत प्रधान व हलका पटवारी को इसकी तुरन्त सूचना दें । तथा इनके दिशा निर्देशानुसार आगामी कार्यवाही करें ताकि नुकसान की भरपाई हेतु सरकार यथाशीघ्र कदम उठा सके ।

10. इच्छुक बेरोजगार जो भेड़-पालन को स्वरोजगार के रूप में अपनाना चाहते हैं, उनके लिए विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय एंव ग्रामीण बैकों द्वारा उपदान सहित ऋण प्रदान किये जा रहे हैं, तथा हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा भी विभिन्न प्रकार की योजनाओं द्वारा इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाने हेतू कई प्रकार की स्कीमें चलाई गई हैं । अत: इच्छुक व्यक्ति इससे संम्बधित जानकारी प्राप्त करने के लिए नजदीक के पशु चिकित्सा अधिकारी, बैक अधिकारियों, विकास खण्ड अधिकारी तथा वूल फैडरेशन के अधिकारियों से संम्पर्क कर इन योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं ।

11. भेड़ पालकों को अच्छी नस्ल के कुत्ते अपने धण मे रखने चाहिए। आजकल यह पाया जा रहा है कि अच्छी 'गद्दी' नस्ल के कुत्ते धणों मे नहीं रहे हैं जिसके फलस्वरूप आये दिन भेड़ पालकों के धणों मे चोरियां/डकैती की वारदातें सामने आ रही हैं। यही नहीं यह कुत्ते जंगली जानवरों से भी धणों की सुरक्षा करते हैं।

भेड़ों की चारागाह सुधार हेतू कुछ सुझाव

भेड़ों को स्वस्थ रखने के लिए यह आवश्यक है कि उनको पौष्टिक आहार, साफ पानी व नमक / खनिज मिश्रण निमियत रूप से समय-समय पर मिलता रहे । भेड़ों की संख्या के अनुपात में ही चारागाह होनी चाहिए, तथा एक ही चारागाह में अधिक भेड़ें व ज्यादा समय तक नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि ऐसे में चारागाहों को नुकसान होगा तथा अगली बार इन चारागाहों में घास अच्छी नहीं हो पाऐगी । अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि वह समय-समय पर अपनी चारागाहों को बदलते रहें तथा चारागाहों को जलाना नहीं चाहिए क्योंकि आग चारागाहों के घास के बीजों व जड़ों को नष्ट कर देती है, जिस कारण अगली बार उस चारागाह में अच्छी घास पैदा होने की गुणवता कम हो जाती है। चारागाहों में उगी जहरीली घास व झाड़ियों की संख्या को कम करें तथा चारागाहों में छायादार व चारे वाले वृक्ष लगाऐं और यदि संम्भव हो सके तो चारागाह की मिटटी का परीक्षण प्रयोगशाला में करवाकर उपयुक्त उर्वरकों एंव खादों का प्रयोग करें, तथा हो सके तो चारागाहों की सुरक्षा के लिए बाड़ भी लगाने का प्रत्यन करें । हमारे देश में चारे व फसलों के 80 प्रतिशत से अधिक का भाग तो बड़े पशु (गाय व भैंस) ही उपयोग कर लेते हैं तथा छोटे पशुओं (भेड़-बकरी) को बचे-खुचे चारे पर ही निर्वाह करना पड़ता है, इन पशुओं में चारे की कमी को दूर करने के लिए हमें सिलवी पास्चर (चरागाहों में पौष्टिक चारे वाले पौधे लगाकर) चारागाहों का विकास करना होगा, इन पशुओं के चारे व दाने के साथ-साथ खनिज लवणों की मात्रा पर भी उचित धयान देना चाहिए । चारे व दाने की मात्रा मेमनों, नर व मादा में अलग-अलग देनी चाहिए जैसे मेमनों को 50-100 ग्राम तक दाना प्रतिदिन, भेड़ को प्रसव से एक महीना पहले से तथा प्रसव के एक महीना बाद तक 250 ग्राम दाना प्रतिदिन व नर मेढ़ों को प्रजनन के दिनों में 500 ग्राम दाना मिश्रण प्रतिदिन व अन्य दिनों में 200-250 ग्राम दाना मिश्रण चारे के अतिरिक्त स्वच्छ पानी की उपलब्धता को भी सुनिश्चित करना चाहिए । भेड़ के दाना मिश्रण में लगभग 70% TDN (Total Digestible Nutrients) तथा 16 % DCP (Digestible Crude Protein) होनी चाहिए ।

प्रदेश की भेड़ों का नस्ल सुधार

हिमाचल प्रदेश में दो स्थानीय नस्ल की भेड़ें (गद्दी एवं रामपूर बुशेहरी) हैं, इन नस्लों में नर भेड़ों का वजन 30-35 किलोग्राम व मादा भेड़ का वजन 24-28 किलोग्राम तक होता है। गद्दी नस्ल की भेड़ें एक समुदाय विशेष जिन्हें गद्दी कहतें हैं जो जिला कांगडा व चम्बा के निवासी हैं द्वारा पाली जाती हैं, इसके अतिरिक्त यह नस्ल जिला कुल्लू और जम्मू कश्मीर के कठुआ, उधमपुर व डोडा जिले के लोगों द्वारा भी पाली हैं । प्रदेश मे दूसरी नस्ल की पाली जाने वाली भेड़ रामपुर बुशेहरी है, जोकि शिमला, सिरमौर, सोलन, किन्नौर एंव उतराखण्ड के ईलाकों में पाली जाती हैं । इन दोनों देसी नस्ल की भेड़ों की ऊन की पैदावार एक से डेढ़ किलोग्राम प्रति भेड़ प्रतिवर्ष होती है । प्रदेश की देसी नस्ल की भेड़ों का ऊन का उत्पादन एवं गुणवता बढ़ाने हेतू नस्ल सुधार अति आवश्यक है। कई अनुसंधानों के पश्चात् यह पाया गया है कि विदेशी नस्लें रैम्बुले तथा रशियन मैरिनो हिमाचल की जलवायु व भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नस्ल सुधार हेतू सवसे अच्छी हैं । अत: भेड़ पालकों को नस्ल सुधार हेतू निम्न प्रक्रिया अपनानी चाहिए :-

(शुद्व गददी नस्ल की भेड़)

X

(रैम्बुले नस्ल का मेंढ़ा)

(दोगली नस्ल की संतान)

पहली बार शुद्ध देसी नस्ल (गद्दी व रामपुर बुशेहरी) भेड़ का प्रजनन शुद्ध विदेशी नस्ल के मेंढ़ें रशियन मैरीनों या रेम्बुले से करवाने पर पैदा हुई संतान में स्थानीय नस्ल के 50 प्रतिशत व विदेशी नस्ल के 50 प्रतिशत गुण आ जाएंगे । इस तरह की पैदा हुई संतान का फिर से शुद्ध विदेशी नस्ल के मेंढ़े से प्रजनन करवाना चाहिए इस प्रजनन के फलस्वरूप जो संतान पैदा होगी उसमें 25 प्रतिशत स्थानीय नस्ल के गुण व 75 प्रतिशत विदेशी नस्ल के गुण होगें । इस प्रकार की भेड़ें अधिक ऊन देगीं व उसकी गुणवता भी अधिक होगी ।

तीसरी बार प्रजनन करवाने पर आवश्यक है कि गुणों का अनुपात 25:75 बना रहे इसलिए 75 प्रतिशत विदेशी नस्ल के मेंढ़ो से ही आगे प्रजनन करवाना चाहिए । नस्ल सुधार की प्रक्रिया में सबसे अधिक ध्यान रखने योग्य बात यह है कि जिस शुद्ध विदेशी मेंढ़ें से शुद्ध स्थानीय भेड़ का प्रजनन करवाया था, उसी विदेशी मेंढ़ें से उत्पन्न हुई संतान से दूसरी बार प्रजनन नहीं करवाना चाहिए तथा एक ही मेंढ़े को बार-बार प्रजनन के लिए प्रयोग नहीं करना चाहिए, जिससे कि अत: (इनब्रिड़िगं) का खतरा उत्पन्न हो जाता है जिसकी वजह से आगे पैदा होने वाली संतानों में कई प्रकार की बीमारियां व उत्पादन में कमी हो जाती है । इसलिए भेड़ पालको को सुझाव दिया जाता है कि वह अपना मेंढ़ा किसी दूसरे भेड़ पालक से दो से अढ़ाई वर्ष बाद बदल लें ।

भेड़ पालकों को अपने झुंड / धण में खसी मेंढ़े (जिन्हें भेड़ पालक डंगार कहते हैं) रखने चाहिए, इस प्रकार के खसी मेंढ़ें भेड़ों के गर्मी में आने के लक्षणों का पता लगवाने में सहायक होते हैं, इनसे ऊन व मांस उत्पादन भी अधिक होता है । भेड़ पालकों को समय-समय पर अपने झुंड से भेड़ों की छटंनी करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए ।

1. ऐसी भेड़ें जिनके दांत खराब / टूट गए हों या व बूढ़ी हो गई हों ।
2. जिन भेड़ों का शारीरिक विकास ठीक से न हो रहा हो।
3. ऐसी भेड़ें जिनके शरीर पर एक समान ऊन न हो ।
4. ऐसी भेड़ें जिनके शरीर पर मोटे बाल अधिक हों ।
5. जिनके पैर खराब हों व घुटने आपस में लगते हों ।

भेड़ों की मुख्य बीमारियां व उनकी रोकथाम के उपाय

अन्य पशुओं की तरह भेड़-बकरियों में भी कई प्रकार के संक्रामक (छूत) रोग व असंक्रामक बीमारियां होती हैं, जिससे भेड़ पालक को प्रतिवर्ष अधिक आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है, इनमें वहुत सी ऐसी बीमारियां हैं जिनका कोई उपचार नहीं है, परन्तु समयानुसार टीकाकरण (Vaccination) करवाने से इन बीमारियों से बचाव हो सकता है । बहुत सी बीमारियां भेड़ों के अच्छे रख-रखाव से कम की जा सकती हैं, जैसे वर्ष में तीन बार भेड़ों को पेट के कीड़ों की दवाई देने से तथा वर्ष में दो बार कीटनाशक दवाई से भेड़ों को नहलाने से विभिन्न प्रकार के चर्म रोगों से बचाया जा सकता है ।

भेड़ों में संक्रामक (छूत के रोग) :-

भेड़ों में इस प्रकार की बीमारियां एक जानवर से दूसरे जानवर में मल,मूत्र,चारा, मुंह नाक के रिसावों व हवा द्वारा जल्दी फैलती हैं ।

पी०पी०आर० (माता, प्लेग, महामारी) :-

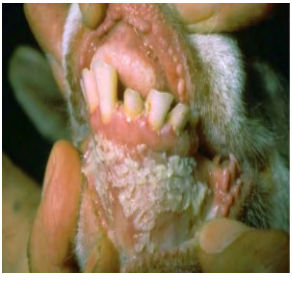

(माता, प्लेग, महामारी से ग्रसित भेड-बकरी)

यह रोग भेड़ बकरियों में सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है, यह बिषाणु जनित रोग है, प्रदेश में पिछले दो दशकों से इस रोग द्वारा भेड़ पालकों को अत्याधिक आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है । यह रोग भेड़ों की अपेक्षा बकरियों में अधिक पाया जाता है ।

बीमारी के लक्षण :-

इस रोग से प्रभावित भेड़-बकरी को बहुत तेज बुखार (105°-107°F) होता है उनके आंख व नाक से पहले पतला पानी व बाद में गाढ़ा रेशा निकलता है। भेड़ - बकरियों के मुंह व नाक के अन्दर छाले पड़ जाते हैं तथा जीभ, मुंह के अन्दर की सतह

सड़ने के साथ सफेद व तौलिये की तरह खुरदरी हो जाती हैं । भेड़-बकरियों में दस्त लगते हैं जिनमें कई बार खून भी आता है । भेड़ -बकरियों में खांसी होती है, तथा कई बार गाभिन भेड़-बकरियों में इस रोग से गर्भपात भी हो जाता है ।

बीमारी से बचाव :-

इस रोग से बचाव हेतू प्रत्येक भेड़ पालक को प्रतिवर्ष अपनी सभी भेड़-बकरियों को टीकाकरण करवाना चाहिए जोकि पशु पालन विभाग द्वारा निशुल्क किया जाता हैं, क्योंकि एक बार बिमारी होने पर इसका उपचार करना असम्भव है । बीमार भेड़ों को स्वस्थ्य भेड़ों से अलग कर देना चाहिए क्योंकि यह एक छूत का रोग है, तथा एक बीमार जानवर से पूरे झुंड (धण) में बड़ी तेजी से फैलता है । रोग हो जाने पर इसका ईलाज सम्भव नहीं है । इस रोग से भेड़ - बकरियों की मृत्यु दर कम करने हेतू भेड़ पालक बीमार भेड़ों में एन्टीबोयोटिक इन्जेक्शन व बुखार, दस्त कम करने की दवाई पशु चिकित्सक के परामर्श अनुसार दे सकते हैं । भेड़ पालक को मृत भेड़-बकरी का शव परीक्षण पशु चिकित्सक से करवाना चाहिए ।

भेड़ों में चेचक रोग (Sheep Pox)

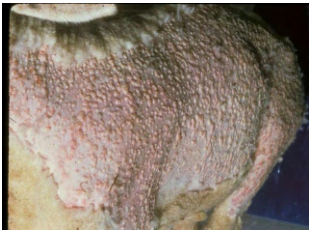

गद्दी भेड़ पालक इस रोग को धमा नाम से भी जानते हैं । यह एक प्रकार का छूत का रोग है, जोकि बिषाणु द्वारा फैलता है, इस रोग से भेड़ -बकरियों के नाक, कान, मुंह, टांग, व थनों में दाने / फफोले हो जाते हैं, जिनमें बाद में मवाद/ पीक पड़ जाती है, इस रोग से ग्रस्त भेड़-बकरी को हलका बुखार होता है, भेड़-बकरियों के मेमनों व बच्चों में यह छाले मुंह के अन्दर तक हो जाते हैं, जिससे वह खाना-पीना छोड़ देते है और उनकी मृत्यु भी हो जाती है ।

रोग से बचाव :-

सबसे पहले इस प्रकार की भेड़-बकरियों को अन्य भेड़-बकरियों से अलग कर देना चाहिए तथा इस रोग से ग्रस्त जानवरों के पड़े छालों / फफोलों को हल्के गर्म पानी व हाईडोजनपरओक्साइड का बराबर मात्र का घोल तैयार कर धोना चाहिए तथा बाद में

एन्टीबायोटिक मलहम छालों पर लगाने के साथ-साथ चार-पांच दिनों तक पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन लगाने चाहिए तथा भेड़ पालक को भी अपने हाथ पोटाशियमपरमैगनेट (लाल दवाई) से धो लेने चाहिए। इस बीमारी से बचाव हेतु टीकाकरण अवश्य करवायें।

भेड़-बकरियों में खुर-मुंह रोग (एफ०एम०डी०):-

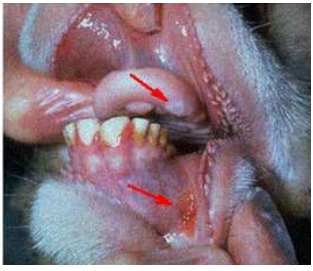

(मुंह खुर रोग से ग्रसित भेड)

गद्दी भेड़ पालक इस बीमारी को रिकणु नामक बीमारी से जानते हैं, यह बीमारी भी बिषाणु जनित छूत का रोग है तथा बहुत जल्दी एक रोग ग्रस्त जानवर से दूसरे जानवरों में फैल जाता है।

रोग के लक्षण :-

इस रोग से ग्रस्त जानवरों के मुंह, जीभ, होंठ व खुरों के बीच की खाल में फफोले व छाले पड़ जाते हैं, भेड़-बकरी को तेज बुखार आता है तथा उनके मुंह से लार टपकती है, भेड़-बकरियां लंगड़ी हो जाती हैं, मुंह व जीभ के अन्दर छाले हो जाने से भेड़-बकरियां घास नहीं खा पाती व कमजोर हो जाती हैं और कई बार गाभिन भेड़-बकरियों का इस रोग से गर्भपात भी हो जाता है, भेड़-बकरियों के बच्चों की मृत्यु दर अधिक होती है।

रोग से बचाव :-

इस रोग में सबसे पहले भेड़ पालक को रोग से ग्रस्त जानवरों को अन्य जानवरों से अलग करना चाहिए, बीमार भेड़ -बकरियों का ईलाज जैसे मुंह के छालों में बोरोग्लिसरिन मलहम खुरों की सफाई लाल दवाई या नीले थोथे के घोल से या फोरमेलिन

के घोल से करनी चाहिए तथा पशु चिकित्सक के परामर्श अनुसार चार-पांच दिन एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन लगाने चाहिए । प्रत्येक भेड़ पालक को छः महीने के अन्तराल के दौरान रोग से रोकथाम हेतू टीकाकरण करवाना चाहिए ।

कन्टेजियस एकथाईमा :-

(मौढ़े से ग्रसित भेड का चित्र)

इस बीमारी को भेड़ पालक 'मौढ़े' नाम से भी जानते हैं । यह बीमारी भी एक प्रकार के बिषाणु द्वारा होती है, इसमें भेड़-बकरी के मुंह, नाक व होठों के बाहरी तरफ फोड़े हो जाते हैं जो काफी बढ़ जाते हैं जिससे मुंह फूल जाता है तथा घास खाने में तकलीफ होने के साथ-साथ बीमार भेड़-बकरी को हल्का बुखार भी रहता है । कई बार छोटे बच्चों में मुंह पर ज्यादा फोड़े होने पर वे घास नहीं खा पाते तथा कमजोर होकर मर जाते हैं ।

बचाव :-

बीमार भेड़-बकरियों को अलग कर उनका उपचार करना चाहिए तथा उपचार हेतू फोड़ों को लाल दवाई के घोल से धोकर उन पर एन्टीसेप्टीक मलहम लगाना चाहिए, ज्यादा बीमार भेड़-बकरी को चार-पांच दिन एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन लगाना चाहिए । निमियत टीकाकरण द्धारा इस बीमारी से बचाव किया जा सकता है।

ब्लू टंग (नीलर्सना) रोग :-

यह एक विषाणु जनित रोग है जो कयूलीक्वायड़ीज मच्छरों द्वारा वर्षा ऋतु में फैलता है। यह रोग छुआछूत से नहीं फैलता है, देशी नस्लों की भेड़ों की तुलना में विदेशी

नस्लों की भेड़ें इस रोग के लिए अधिक संवेदनशील होती हैं ।

रोग के लक्षण :-

106^0-107^0 फा. ज्वर, सुस्ती तथा होंठ नाक, चेहरा तथा कान में सूजन, आंख, मुंह व नाक में लाली, नाक से पानी आना तथा जीभ में सूजन व नीली पड़ने के अतिरिक्त मुंह के अन्दर, जीभ व गालो पर घाव, त्वजा में सूजन के कारण ऊन का टूटना व झड़ना, खुरों के बीच की चमड़ी में सूजन के कारण लंगड़ापन, गर्दन में अकड़न व गर्भवती भेड़ों में गर्भपात तथा मृत मेमनों का जन्म इस रोग के मुख्य लक्षण हैं ।

रोग की रोकथाम :-

उपरोक्त लक्षणों से ग्रसित भेड़ों की जांच नजदीक के पशु चिकित्सक से करवायें तथा भेड़ों का मच्छरों से बचाव करवाने का प्रत्यन करें ।

एन्थ्रेक्स रोग :-

यह रोग जीवाणु द्वारा होता है, भेड़ों की उपेक्षा यह रोग बकरियों में अधिक होता है जिसे गद्दी भेड़ पालक (गंणडयाली नामक) रोग से जानते हैं । यह रोग भेड़-बकरियों से मनुष्य में भी हो जाता है। मनुष्य में इस रोग से शरीर पर बडा फोड़ा (दाणा) हो जाता है । इस रोग में भेड़-बकरियों में बहुत तेज बुखार आता है, मृत भेड़-बकरी के नाक, कान, मुंह व गुदा से खून का रिसाव होता है ।

रोग से बचाव :-

इस रोग से मरे भेड़-बकरियों की खाल नहीं निकालनी चाहिए तथा मृत जानवर को गहरे गढ़े में दबा देना चाहिए तथा चरागाह को बदल देना चाहिए । बीमार भेड़-बकरियों को एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन चार-पांच दिन पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार देना चाहिए । इस रोग से बचाव हेतू टीकाकरण करवाया जा सकता है ।

ब्रूसीलोसिस :-

यह बीमारी जीवाणु द्वारा होती है, इस बिमारी में गाभिन भेड़-बकरियों में चार या साढ़े चार महीने के दौरान गर्भपात हो जाता है, बिमार भेड़-बकरी की बच्चेदानी भी पक जाती है। गर्भपात होने वाली भेड़-बकरियों की जेर अटक जाती /समयानुसार नहीं गिरती, इस बीमारी से मेंढ़ों व बकरों के अण्डकोश पक जाते हैं तथा घुटनों में भी सूजन

आ जाती है, जिससे इनकी प्रजनन क्षमता कम हो जाती है । इस रोग के लक्षण पाए जाने पर भेड़ पालक को सारे का सारा झुंड खत्म कर नये जानवर पालने चाहिए । कई बार भेड़ पालक गर्भपात हुए मृत मेमने व उस भेड़ की जेर खुले में फैंक देते हैं जिससे की इस बीमारी के कीटाणु अन्य झुंड में भी फैल जाते हैं । अत: भेड़ पालकों को चाहिए कि वह ऐसे मृत मेमने व जेर को गहरा गडढ़ा कर उसमें दबा देना चाहिए । यह रोग भेड़-बकरियों से मनुष्य में भी आ जाता है। जिससे मनुष्य में हल्का बुखार, बदन सिर दर्द व अधिक पसीना आना । इसलिए भेड़ पालकों को इस रोग से बचाव हेतू समय-समय पर अपने खून की जांच करवानी चाहिए । यह जाँच चौधरी सरवन कुमार कृषि विश्वविद्यालय के डा0 जी0 सी0 नेगी पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय में सुक्ष्मजीव विज्ञान विभाग (माईक्रोबायोलोजी) में निशुल्क करवाई जा सकती है। जांच की रिपोर्ट सम्बन्धित भेड़ पालक को महाविद्यालय द्वारा दूरभाष या एसएमएस से उपलब्ध करवा दी जाती है ।

फुट रोट :-

गद्दी भेड़ पालक इस रोग को चिकड़ नामक रोग से जानते हैं, यह रोग जीवाणुओं द्वारा होता है इस रोग में भेड़-बकरियों के खुरों की बीच की चमड़ी पक जाती है तथा वह लंगड़ी हो जाती है । भेड़ों को तेज बुखार हो जाता है तथा इस रोग के जीवाणु मिटटी द्वारा एक जानवर से दूसरे जानवर में चले जाते हैं, यह भी एक छूत का रोग है जोकि एक जानवर से पूरे झुंड़ में फैल जाता है।

रोग से बचाव :-

इस रोग से ग्रस्त भेड़-बकरी को अपने झुंड़ में न लाएं तथा जिस रास्ते से इस बीमारी वाला अन्य झुंड़ गुजरा हो उस रास्ते से एक सप्ताह तक अपने झुंड़ को न ले जाएं, बीमार भेड़-बकरियों के खुरों की सफाई रखें जिसके लिए उन के खुरों को नीले थोथे (कापरसल्फेट) के घोल से धोऐं भेड़ फार्मों में फुट बाथ जोकि एक किलो जिंक सलफेट को 12 लीटर पानी में घोल कर तथा उसमें थोड़ा सा साबुन घोलकर तैयार किया जाता है, में भेड़ों को प्रतिदिन 15-20 मिनट तक खड़ा करने पर इस बीमारी से भेड़ों को राहत

मिलती है इसके साथ एन्टीबायोटिक मलहम तथा चिकित्सक की सलाह अनुसार चार-पांच दिनों तक एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन लगाएं ।

गलघोटू :-

यह बीमारी भेड़-बकरियों में जीवाणुओं द्वारा फैलती है तथा मुख्यत: जब भेड़ पालक अपने झुंड़ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है उस समय इस रोग के अधिक फैलने की सम्भावना होती है । इस बीमारी से भेड़ -बकरियों के गले में सूजन हो जाती है जिससे उसे सांस लेने में कठिनाई होती है तथा इस बीमारी में भेड़-बकरी को तेज बुखार, नाक से लार निकलना तथा निमोनिया हो जाता है।

रोग का उपचार व बचाव :-

इस रोग के उपचार हेतू भेड़ पालक को तीन से पांच दिन तक एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन व बुखार कम करने के इन्जेक्शन पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार देने चाहिए। इस रोग से बचाव हेतू वर्ष में दो बार (छ: महीने के अन्तराल) टीकाकरण करवाना चाहिए ।

एन्टीरोटोक्सीमियां :-

गद्दी भेड़ पालक इस रोग को हगलू नाम से जानते हैं । यह भेड़ों का असंक्रामक रोग है,यह मुख्यत: जीवाणुओं द्वारा फैलता है, यह जीवाणु प्राय: भेड़-बकरियों के पेट के अन्दर होता है, इस बीमारी में भेड़ -बकरियों में तेज पेट दर्द होता है, और यह अधिकतर छोटे बच्चों में यह रोग ज्यादा होता है तथा जानवर धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है, कई बार उसे चक्कर आते हैं, मुंह से झाग निकलता है और दस्त के साथ खून भी आता है ।

रोग से बचाव :-

इस बीमारी से बचाव हेतू भेड़ पालक को प्राथमिक उपचार हेतू नमक व चीनी का घोल पिलाना चाहिए क्योंकि यह दस्त के कारण जानवर के शरीर में हुई पानी की कमी को पूरा करता है इसके साथ-साथ पेट के कीड़ों की दवाई अपने झुंड़ को पिलानी चाहिए,

घास चराने की जगह समय-समय पर बदलनी चाहिए, दस्त तथा बुखार को कम करने के लिए पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार दवाई व उपचार करवाना चाहिए । बचाव हेतू भेड़ पालक को वर्ष में एक बार टीकाकरण करवाना चाहिए ।

निमोनिया :-

यह फेफड़ों की बीमारी है, जो जीवाणुओं, विषाणुओं व परजीवियों (लँग वर्म) द्वारा फैलती है, बीमारी में भेड़ों को सांस लेने में कठिनाई होती है उनमें हल्का बुखार होता है उनकी आंख व नाक से पानी निकलता है जो बाद में गाढ़ा रेशा बन जाता है और भेड़ों में खांसी होने के साथ-साथ घास खाना कम कर देती हैं जिससे कमजोरी के कारण भेड़ें मर जाती हैं । इस बीमारी के बचाव हेतू भेड़ पालक को पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार इस बीमारी का उपचार करवाना चाहिए ।

थनैला रोग (मेस्टाईटिस)

इस बिमारी में भेड़-बकरियों को तेज बुखार आता है, थनों में सूजन तथा थन गर्म व सख्त हो जाते हैं, दूध के साथ खून भी आता है।

बचाव :- थनों को लाल दवाई (पोटाश युक्त पानी) से थोना चाहिए ।

थनों पर एन्टीबायोटिक क्रीम का उपयोग करना चाहिए । 3-4 दिन रोग ग्रस्त भेड़-बकरियों को एन्टीबायोटिक इन्जैक्ज़न पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार देने चाहिए, और जिस भेड़ -बकरी के थन इस बिमारी से खराव हो गये हों उन्हे झुंड/धण से निकाल / बेच देना चाहिए ।

भेड़ों में पाये जाने वाले परजीवी रोग एवं उनकी रोकथाम

फैसियोलिओसिस (लीवर फलूक) :-

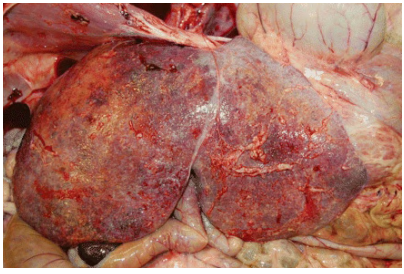

(कलेजे के कीडों का चित्र)

यह रोग पती के समान भूरे रंग के कीड़ों द्वारा होता है । यह कीड़े भेड़ के कलेजे तथा पिताशाय में होते हैं । यह कीड़े भेड़ो के कलेजे को नुकसान पहुचाते हैं इस रोग से भेड़-बकरियां बहुत कमजोर हो जाती हैं, तथा उनमें खून की कमी हो जाती है, जिससे भेड़-बकरियां सुस्त हो जाती हैं तथा उनके जबडों के नीचे पानी भर जाता है । इस रोग के कारण भेड़ों को दस्त शुरू हो जाते हैं तथा बहुत सी भेडें कमजोरी व दस्त की बजह से मर जाती है जिससे भेड़ पालक को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है ।

रोग का उपचार व बचाव :-

यह रोग उन भेड़-बकरियों में ज्यादा होता है जो तालाब व डैम के किनारों पर चराई जाती हैं । तालाब व डैम के किनारे उगी घास में प्राय: फिलें होती है और घास चरते समय कई बार यह फिले भेड़-बकरियों के मुंह द्वारा पेट में पंहुच कर बीमारी फैलाती है । इस रोग से बचाव हेतू भेड़ पालक अपनी भेड़ों को ऐसे स्थानों में कम चराएं या वहां पर चराने से पहले नीला थोथा (कोपर सल्फेट 10 से 15 किलोग्राम प्रति एकड भूमि में छिड़काव करने से फिले मर जाती हैं जिसके उपरान्त यह रोग नही फैलता । इस रोग में भेड़-बकरियों को जिगर के कीड़े मारने की दवाईयां जैसे ओक्सीक्लोजानाईड, जैनिल, आकसीड, डिस्टोडीन आदि देने से बचाव किया जा सकता है तथा कमजोर भेड़-बकरियों को इन्जैक्शन वैलामाईल, लिवोल पाउडर व खनिज मिश्रण खिलाऐं तथा समय-समय पर अपनी भेड़-बकरियों की मेगनियों की जांच नजदीक के पशु चिकित्सालय या प्रयोगशाला

में करवाते रहें तथा पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार पेट व जिगर के कीड़ों को मारने की दवाई पिलाऐं ।

गोल कीड़े :-

इस प्रकार के कीड़े मुख्यत: भेड-बकरियों की आंतो में पहले धागे की तरह लम्बे व सफेद रंग के होते हैं जोकि भेड़-बकरियों की आंतो से खून चूसते है, कई बार भेड़-बकरियों में इन कीड़ों के कारण दस्त लगते हैं जिससे जानवर कमजोर हो जाते हैं तथा ऊन उत्पादन में भी कमी आ जाती है ।

रोग का उपचार :-

(पेट के कीडे व दवाई पिलाने का चित्र)

भेड़ पालक अपनी भेड़ों को वर्ष में कम से कम तीन बार पेट के कीडों को मारने की दवाई पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार अवश्य पिलाऐं।

टेप वर्म :-

(फीते कीडो का चित्र)

(फेफडे के कीडों का चित्र)

इस प्रकार के कीड़े भी भेड़-बकरियों की आतों में पाऐ जाते हैं तथा यह कई मीटर लम्बें व रीबन/ फीते की तरह होते हैं, यह कीडे भी भेड़-बकरियों का खून चूसते हैं तथा उन्हें कमजोर कर देते हैं ।

फेफडों व श्वास नली के गोल कृमि /कीडे (लंग वर्म) :-

यह भेड़-बकरियों के फेफडों व श्वास नली में होते हैं तथा इसके कारण भेड-बकरियों में वरमिनस निमोनिया हो जाता है, बीमार भेड़ - बकरियों में खांसी हो जाती है तथा उनके नाक से गाढ़ा पानी निकलता है, ऐसी भेड़-बकरियों को सांस लेने में तकलीफ होती है तथा फेफड़े खराब हो जाने से जानवर मर जाते हैं ।

रोग का उपचार व वचाव :-

भेड़ों के मेगनियों की जांच करवानी चाहिए तथा मृत भेड़ों का शव परीक्षण करवाने से इस रोग का पता चलता है, भेड़-बकरियों को ज्यादा समय तक एक चरागाह में न चराऐं, चरागाह में फिलें व केचुए अधिक नहीं होने चाहिए क्योंकि यह इस रोग को फैलाने में मदद करते है। बीमार भेड़-बकरी का उपचार/ईलाज पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार करें ।

भेड़-बकरियों में चर्म रोग :-

(चरड़ वाली भेड का चित्र)

अन्य पशुओं की भान्ति भेड़-बकरियों में भी जूऐं, पिस्सु, चिचड़ इत्यादि परजीवी होते हैं, यह भेड़-बकरियों की चमड़ी में अनेक प्रकार के रोग पैदा करते हैं जिससे जानवर के शरीर में खुजली / चरड़ हो जाती है तथा जानवर अपने शरीर को बार-बार दूसरे जानवरों के शरीर व पत्थर या पेड़ से खुजलाता है जिससे कि उस जगह पर जख्म हो जाते हैं उस जगह की चमड़ी सख्त हो जाती है व बाल झड़ जाते हैं और धीरे-धीरे यह भेड़-बकरियों के पूरे शरीर में फैल जाती है तथा एक बीमार जानवर से पूरे झुंड / धण में फैल जाती है । जिससे उन भेड़ों से बहुत कम व घटिया ऊन प्राप्त होती है ।

अपेक्षा ज्यादा होता है ।

रोग के लक्षण :-

भेड़-बकरियों का बाईं तरफ का पेट फूला हुआ दिखाई देता है ज्यादा पेट फूलने के कारण उसे पेट दर्द व सांस लेने में कठिनाई होती है तथा शीघ्र उपचार न मिलने पर भेड़-बकरी की मृत्यु हो जाती है ।

रोग से बचाव व उपचार :-

भेड़-बकरियों को सुबह ओस पडी गिली घास जैसे कलोवर, वरसीम व फलीदार दलहन या सड़ी घास को खाली पेट न खाने दें, भेड-बकरियों को टिमपोल पाउडर पानी में घोल कर या तरल वलोटासिल नामक दवाई पिलाएं या अलसी का तेल 100 से 150 मिलीलीटर में 10 मिलीलीटर तारपीन का तेल मिलाकर पिलाएं या 5-10 ग्राम मीठा सोड़ा गर्म पानी में घोल कर पिलायें यदि वहुत ज्यादा गैस पेट में भर गई हो तो 16 गेज या 18 गेज की सुई जानवर के पेट की बांई तरफ लगाकर (खुबाकर) गैस को निकालें ।

भेड़-बकरियों में जहरीला घास खाने से होने वाला नुकसान :-

कई बार भेड़-बकरियां जहरीला घास (जैसे फुलणु, कश्मीरी पता)हंरगड़ (कलीफुल, कालाधौआं, अर्जुन व बिल) आदि खाने से बीमार हो जाती है तथा कई बार समय पर उचित उपचार न मिलने पर मर जाती है, भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि अपनी भेड़-बकरियों को ऐसे जहरीले घासों से बचाएं और दुर्भाग्यवश कोई जानवर ऐसे घासों को खा लेता है तो उसका तुरन्त नजदीक के पशु चिकित्सक से उपचार करवाएं यदि संम्भव न हो तो उस जानवर को खाए गये जहरीले घास का असर कम करने के लिए (कोयला पीस कर) क्योलिन पिलाएं तथा जानवर द्वारा फुलणु खाए जाने पर उसके जहर को कम करने के लिए क्योलिन के साथ-साथ पेट को साफ करने के लिए मैगसल्फ नामक दवाई पिलाएं तथा ऐसे जानवर को धूप में न रखें और समय रहते पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उसका उपचार करवाएं ।

भेड़-बकरियों में टीकाकरण समय सारिणी

क्रं०	बिमारी का नाम	टीकाकरण का समय	कितने समय बाद फिर लगवाएं
1.	मुंहखुर रोग	3 महीने की आयु में फरवरी,मार्च व सितम्बर, अक्तूबर	छः माह बाद
2.	एन्टीरोटाक्सीमियां	प्रसव से एक माह पहले या जब मेमना दो महीने का हो	एक वर्ष बाद
3.	पी.पी.आर.	4 महीने की आयु में	एक वर्ष बाद
4.	भेड़ चेचक (Sheep Pox)	3 महीने की आयु में प्रायः दिसम्बर से मार्च	एक वर्ष बाद
5.	गलघोटू व लंगड़ा बुखार (HS&BQ)	3 महीने की आयु में मई-जून	एक वर्ष बाद
6.	पालगपन (हल्क) रैबिज यह टीका पागल कुते, लोमड़ी, नेवले या किसी अन्य पागल जानवर द्वारा काटने पर लगाये जाते है।	प्रथम टीका-काटने के दिन (0 दिन) दूसरा टीका- तीन दिन पर तीसरा टीका- सातवें दिन पर चौथा टीका - चौदवें दिन पर पांचवा टीका - अठाईवें दिन पर छठा टीका - नवें दिन पर	

उपरोक्त सभी टीके पशुपालन विभाग हि0प्र0 द्वारा निशुल्क लगाए जाते हैं। अतः प्रदेश के समस्त भेड़ पालकों को परामर्श दिया जाता है कि इन टीकाकरण हेतू अपने नजदीकी पशु चिकित्सा संस्थान से सम्पर्क करें तथा पेट के कीड़ों की दवाई समय-समय पर गोबर की जाँच करवा कर देते रहें। प्रायः वर्ष में कम से कम तीन बार चार-महीने के अन्तराल पर अवश्य दें।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर० के वी० वाई०) के अन्तर्गत भेड़ व बकरियों को परिजीवि रोगों से बचाव हेतु परियोजनाः-

वर्ष 2013-14 मे इस परियोजना के अन्तर्गत 6 लाख भेड़ बकरियों को **'सचल शीप डीप टैंकों'** माधयम से दवाईयां तथा रसायन युक्त स्नान सुविधा मुहैया करवाई जा रही है।0 यह सुविधा अब पशु पालन विभाग के निम्नलिखित स्थानों पर प्राप्त कर सकते हैं:-

क.सं.	किस स्थान पर उपलब्ध है	कौन सा संस्थान इसे देख रहा है	सम्पर्क न०
1.	पशु चिकित्सालय सियुन्ता, चम्बा (डुबा कर नहलाने वाला सचल टैंक)	उप निदेशक, पशु पालन विभाग चम्बा	01899-222317 226568
2.	पशु चिकित्सालय होली, चम्बा (धारा प्रवाह द्वारा नहलाने वाला सचल टैंक)	सहायक निदेशक, पशु पालन विभाग भरमौर जिला चम्बा	01895-225048
3.	सहायक निदेशक पशु प्रजनन होल्टा, पालमपुर जिला कांगडा (डुबा कर नहलाने वाला सचल टैंक)	सहायक निदेशक पशु प्रजनन होल्टा, पालमपुर जिला कांगडा (डुबा कर नहलाने वाला सचल टैंक)	01894-230467
4.	पशु चिकित्सालय रायसन (डुबा कर नहलाने वाला सचल टैंक)	उप निदेशक, पशुपालन विभाग कुल्लु।	01902-222553
5.	पशु चिकित्सालय, जियोरी (डुबा कर नहलाने वाला सचल टैंक)	उप निदेशक, पशु पालन विभाग शिमला।	0177-2832156
6.	पशु औषधालय टापरी। (धारा प्रवाह द्वारा नहलाने वाला सचल टैंक)	उप निदेशक पशु पालन विभाग किन्नौर स्थितरिकांगपियो	01786-222570

यह टैंक जहा-जहां सडक की सुविधा हो और पानी का स्त्रोत समीप हो, वहां पर पशु पालन विभाग द्वारा चयनित स्थानों पर भेड़-पालकों के प्रवास के दौरान उनकी सुविधा के लिए भी अस्थाई तौर पर लगाया जा सकता है।

भेड़ पालकों को भेड-बकरियों की संक्रामक व असंक्रामक रोगों के बचाव हेतू कुछ जरूरी सुझाव

1. भेड पालक अपनी भेड़-बकरियों को संक्रामक बिमारीयों जैसे पीपीआर, खुरमुंही, एन्थ्रेक्स, भेड़-बकरी चेचक रोग से बचाव हेतू पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार टीकाकरण करवाना सुनिश्चित करें क्योंकि इन बिमारियों का कोई उपचार नहीं है केवल इन्हें टीकाकरण द्वारा ही रोका जा सकता है ।

2. प्रत्येक भेड़ पालक भेड़-बकरियों को वर्ष में कम से कम तीन बार उनकी मेगनियों की जांच नजदीक के पशु चिकित्सालय / प्रयोगशाला में अवश्य करवा कर, पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार पेट, जिगर व फेफडों के कीडों की दवाई जरूर दें ।

3. भेड़ पालक भेड़ों को ऊन कटाई के बाद कीटनाश्क स्नान अवश्य करवाऐं, जिससे की भेड़ों को चर्म रोगों से छुटकारा मिलेगा तथा ऊन उत्पदान में भी वृद्धि होगी ।

4. भेड़ पालक बीमार भेड़-बकरियों का उपचार खुद न कर पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार ही करें तथा जहां तक संम्भव हो सके मृत भेड़-बकरी का शव परीक्षण करवाएं जिससे कि पशु चिकित्सक को बीमारी पहचानने में सुविधा होगी व अन्य जानवरों को बीमारी से बचाया जा सके।

5. भेड़ पालक जब भी अपने झुंड में बीमार जानवर देखें तो उसे तुरन्त अन्य भेड़ बकरियों से अलग कर उसका उपचार करवाऐं, क्योंकि बहुत सी बिमारियां छूत के कारण एक जानवर से दूसरे जानवर में बहुत जल्दी फैलती है जिससे कई बार पूरा झुंड बीमारी की चपेट में आ जाता है ।

6. भेड़ पालक बीमारी से मरी भेड-बकरियों का मांस न खांए तथा न ही ऐसे मांस को बाजार में बेचें क्योंकि कई बार ऐसा मांस खाने से मनुष्य भी बीमार पड़ सकता है ।

7. भेड़ पालक जब भी किसी बीमार भेड-बकरी को दवाई देता है या उसे पकडता है उसके बाद भेड़ पालक को अपने हाथ अच्छी तरह से साबुन लगाकर धोने चाहिए क्योंकि कई प्रकार की बिमारियां जानवरों से मुनष्य में भी लग जाती हैं ।

8. कई बार भेड़ पालक भेड़-बकरियों के शरीर पर पड़े जख्मों पर जहरीली दवाईयों जैसे वयूटोक्स आदि को लगा देते हैं जोकि गलत है क्योंकि कई बार इस तरह से उपचार करने पर मनुष्य द्वारा उस जानवर का दूध, मांस खाने पर यह जहर उसे हानि पहुंचा सकता है, और कई बार इससे उसकी मृत्यु भी हो सकती है । अतः भेड पालकों को सुझाव दिया जाता है कि पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार ही इस तरह की दवाईयों का प्रयोग अपने जानवरों में करें ।

9. कई बिमारियां भेड़-बकरियों से मनुष्यों में भी फैल जाती हैं जैसे ब्रुसोलोसिस, एन्थ्रेंक्स, पागल जानवर के काटने पर रैबिज, चेचक इत्यादि इसलिए भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि ऐसी

बिमारियों के लक्षण देखने पर अपना बचाव अवश्य करें तथा शीघ्र चिकित्सक की सलाह लें ।

10. भेड़ पालक कई बार अपनी भेड़-बकरियों का स्वयं ईलाज करते हैं उदाहरणतया जब भी किसी भेड़-बकरी की आंख में सफेदी आ जाती है, तो भेड़ पालक उसकी आंख में शीशा पीस कर, नमक व कुंगु आदि आंख में डालते है। जोकि बिल्कुल गलत है, क्योंकि आंख एक बहुत नाजुक अंग है तथा इसमें शीशा व नमक इत्यादि डालना उपचार के विपरीत है । ऐसे में भेड़ पालक जानवर की आंख को साफ ठण्डे पानी से धोऐं व उसमें सम्भव हो सके तो बोरिक ऐसिड नमक पाउडर व आंख में डालने वाली दवाई डालें । प्राय: यह भी देखा गया है कि बहुत से भेड़ पालक कई बार बीमार भेड़-बकरियों में पेट दर्द व अफारा हो जाने पर उनको अपना मूत्र व नमक का मिश्रण भी देते हैं जिसे से कई बार इस तरह के उपचार से जानवर की अचानक मृत्यु तक हो जाती है । इसलिए भेड़ पालक को सुझाव दिया जाता है कि वह पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार ही बीमार भेड़-बकरी का उपचार करवाएं ।

11. प्राय: भेड़ पालक जब भी पशु चिकित्सालय / औषधालय में आते है तो संम्बधित अधिकारी/ कर्मचारी से केवल टैरामाईसीन इन्जैक्शन व चर्म रोग की दवाई बयुटोक्स की ही मांग करते है और जब इस संदर्भ में अधिकारी/कर्मचारी इससे भी बढ़िया दवाईयां इन भेड़ पालकों को देना चाहते है तो वह इन्हें लेने से इन्कार कर अपने द्वारा मांगी गई दवाईयों की मांग करते है । अत: भेड़ पालकों को सुझाव दिया जाता है कि वह पशु चिकित्सक द्वारा दी गई दवाईयों को ही लें और उनकी सलाह अनुसार ही भेड़-बकरियों का उपचार करें / करवाएं ।

12. भेड़ पालक जब भी किसी बीमार भेड़-बकरी को दवाई का इन्जेक्शन/टीका स्वंय लगाता है तो उन्हें इसकी सही जानकारी न होने के कारण उस टीके को जानवर के अगले पुटठे के नीचे लगाते हैं तथा कई बार जानवर को इस तरह के इन्जेक्शनों को पिला भी देतें हैं या जख्मों पर छिड़क भी देते हैं । अत: इस तरह लगाए जाने वाले टीकों से जानवर की तुरन्त मृत्यु भी हो सकती है क्योंकि गलत जगह पर लगाए गए टीके से जानवर के फेफडों को भी नुक्सान पहुंच सकता है। अत: भेड़ पालक को सुझाव दिया जाता है कि जहां तक सम्भव हो सके पशु चिकित्सक से ही अपनी भेड़-बकरियों में टीकाकरण करवाएं और यदि स्वंय टीका लगाना हो तो पिछली टांग के पुटठे (जिसे गद्दी भेड़ पालक चडाटी नाम से जानते हैं) मांस में ही लगाएं । कई भेड़ पालक जानवर को जहां जख्म होता है उसी जगह पर टीका लगाते हैं जो कि गलत है इसलिए उन्हें परामर्श दिया जाता है कि ऐसा न करें ।

केन्द्रीय भेड़ पालक बीमा योजना

प्रदेश सरकार द्वारा केन्द्र सरकार की सहायता से भेड़ पालकों के बच्चों एवं उनके उत्थान हेतू केन्द्रीय भेड़ पालक बीमा योजना का संचालन किया गया है जिसमें केन्द्रीय ऊन विकास मण्डल, जोधपुर व भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा प्रायोजित है तथा प्रदेश में पशु पालन विभाग एवं हिमाचल प्रदेश वूल फैडरेशन द्वारा संयुक्त रूप से इस योजना को कार्यान्यिवित किया जा रहा है । इस योजना के मुख्य पहलू निम्न प्रकार से हैं :-

1. भेड़ पालक की आयु सीमा 18-59 वर्ष होनी चाहिए तथा उसे अपनी आयु के प्रमाण पत्र की छाया प्रति सम्बन्धित अधिकारी को देनी होगी ।
2. भेड़ पालक को प्रतिवर्ष मु0 80/-रूपये अधिशुल्क (Premium) के रूप में सम्बन्धित अधिकारी के पास जमा करवाने होगें । शेष अधिशुल्क (Premium) भारतीय जीवन बीमा निगम (100/-रूपये) व केन्द्रीय ऊन विकास मण्डल, जोधपुर (150/-रूपये) अदा कर रहा है ।
3. इस योजना के अन्तर्गत मिलने वाले लाभों का ब्यौरा :-

(क)	बीमित भेड़ पालक की प्राकृतिक मृत्यु पर उसके परिवार को मिलने वाली राशि ।	रूपये 60,000/-
(ख)	बीमित भेड़ पालक की दुर्घटना में हुई मृत्यु पर उसके परिवार को मिलने वाली राशि।	रूपये 1,50,000/-
(ग)	बीमित भेड़ पालक की दुर्घटना में दोनों बाजू, आंखे, टांगें चली जाने पर मिलन वाली राशि ।	रूपये 1,50,000/-
घ)	बीमित भेड़ पालक की दुर्घटना में एक टांग या एक बाजू या एक आंख चले जाने पर मिलने वाली राशि ।	रूपये 75,000/-

उपरोक्त सभी मामलों का निपटारा व राशि का भुगतान भारतीय जीवन बीमा निमग द्वारा ही किया जाएगा ।

इसके अतिरिक्त भेड़ पालक के दो बच्चों जो कि नवीं से बारहवीं कक्षा में पढ़ रहें हों को प्रतिमाह मु0 100/- छात्रवृति (जो कि प्रत्येक छमाही में देय होगी) प्रदान की जाएगी जिसके लिए उन्हे सम्बन्धित स्कूल के प्राचार्य से निर्धारित प्रपत्र को प्रतिहस्ताक्षरित कर सम्बन्धित अधिकारी को सौंपने होंगे ।

एकीकृत उन सुधार विकास कार्यक्रम (आई0 डबल्यू0 आई0 डी0 पी0)

यह परियोजना केन्द्रीय भेड व उन विकास केन्द्र जोधापुर, राजस्थान द्वारा हिमाचल प्रदेज़ के विभिन्न जिलों चम्बा, कांगडा, कुल्लु, ज़िमला, और किन्नौर मे वर्श 2013-14 से प्रायोजित की गई है जिसके अन्तर्गत 4 लाख भेडों का पंजीकरण किया जाना है जिस हेतु हिमाचल प्रदेज़ के विभिन्न जिलों मे पंजीकरण का कार्य चल रहा है। इसके अन्तर्गत जो सुविधाएं दी जायेंगी का ब्यौरा निम्नलिखित है:-

- चयनित भेडों हेतु परिजीवि रोगों की रोकथाम व अन्य दवाईयां
- नस्ल सुधार हेतु बीजू मेढा वितरण

यह सभी सुविधाएं भेड पालकों को पशु पालन विभाग द्वारा हर जिला के चयनित पशु चिकित्सालयों/औषधालयों मे प्रदान की जांयेगी जिनका ब्योरा जिला वार व संस्थान वार निम्नलिखित है:-

क) जिला चम्बा:-

पशु चिकित्सालय भरमौर, होली, चूडी, मैहला, चम्बा, कोटी, किहार, सलूणी, तीसा, चुवाडी तथा सियुन्ता

ख) जिला कांगडा:-

पशु चिकित्सालय धर्मशाला, योल, नगरोटा, डाढ, द्रंग, योल, पालमपुर, भवारना, सलियाणा, कण्डबाडी, पपरोला, दियोल, बीड, लोहारडी तथा पशु चिकित्सालय शाहपुर के अन्तर्गत पशु औषधालय रिहलू, सल्ली, रिडकमार तथा रूमेड़

ग) जिला कुल्लु:-

पशु चिकित्सालय कुल्लु, भुटटी, रायसन, पतली कुहल मनाली, सैंज, गडसा, भुन्तर, बन्जार, मनीकरण तथा आनी

घ) जिला शिमला:-

पशु चिकित्सालय रामपुर, चिडगांव, जियोरी, क्वार, केन्द्रीय पजु औषधालय टिक्करी तथा लैलानर्सरी

ड़) जिला किन्नौर:-

पशु चिकित्सालय भावानगर, न्यूगलसेरी, कटगांव, उरनी, सांगला, रिकांगपियो, रिब्बा, मोरंग तथा पूह।

भेड़ पालक समृद्धि योजना

योजना के अतंगर्त भेड़- बकरी व खरगोश पालकों को दी जाने वाली सुविधाएं

* योजना के अन्तर्गत भेड़-बकरी पालकों को 40 भेड़-बकरी तथा दो नर मैढ़े/बकरे उपलब्ध करवाने हेतु एक लाख रूपये का ऋण जिसमें से 33,300 रूपये अनुदान के रूप में उपलब्ध करवाए जाएंगे । भेड़-बकरी पालक का भागधन (Margin Money) इस योजना में 10,000 रूपये होगा ।
* भेड़/बकरी प्रजनन ईकाई हेतु 500 भेड़-बकरी तथा 25 नर मैढ़े/बकरे उपलब्ध करवाने हेतु पचीस लाख रूपए का ऋण जिसमें से 8.33 लाख रूपये अनुदान के रूप में उपलब्ध करवाए जाएंगे । भेड़-बकरी पालक का भागधन इस योजना में 6.25 लाख रूपये होगा ।
* खरगोश पालकों को अंगोरा इकाई स्थापित करने हेतु 2.25 लाख रूपए के ऋण पर 75 हजार रूपए का अनुदान उपलब्ध होगा ।
* योजना के प्रथम चरण में जिला चम्बा, कांगड़ा व मण्डी के भेड़-बकरी पालकों तथा जिला शिमला व कुल्लू के खरगोश पालकों को राष्ट्रीयकृत बैंको, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको, राज्य सहकारी बैंकों, राज्य सहकारी कृषि व ग्रामीण विकास बैंकों के माधयम से ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा ।
* प्रदान किए जाने वाले ऋण को नौ वर्षों की अवधि में आसान किस्तों में वापिस किया जाना है जिसमें पहले दो वर्षों में कोई किस्त देय नहीं होगी ।

इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ उठाने के लिए अपने निकटतम बैंक की शाखाओं/पशु चिकित्सा संस्थानों से सम्पर्क करें । योजना में पारम्परिक भेड़-बकरी पालकों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं तथा स्वयं सहायता समूहों को प्राथमिकता दी जाएगी ।

योजना सबंधी अधिक जानकारी के लिए उप-निदेशक (पशु स्वास्थ्य/प्रजनन) जिला चम्बा 01899-222317 या 226568, जिला कांगड़ा 01892-222061, जिला मण्डी 01905-223077, जिला शिमला 0177-2832156, जिला कुल्लू

आस्ट्रेलिया में भेड़ पालन

1. आस्ट्रेलिया में भेड अनुवंशिकी व प्रबन्धन:- आस्ट्रेलिया ने भेड़ अनुवंशिकी व प्रबंन्धन हेतु विभिन्न मापदंड निर्धारित किये हैं जिन्हें वो 'आस्ट्रेलिया शीप ब्रीडिग वैल्यूस (ASBV)' कहते हैं जैसे कि वजन (WT), ऊन के गुच्छे का वजन (GFW), ऊन के रेशों की मोटाई (FD), गुच्छे की ताकत (SS), आई मसल डैपत (EMD), फैट डैपत (FD), वर्मस एग कांउट (WEC) तथा अन्य बहुत सारे मापदण्ड हैं जिनमे आपसी समन्वय बारे अध्ययन कर भेडों की नस्ल मे सुधार किया गया है तथा इस हेतू उन्होने एक प्रोग्राम भी विकसित किया है जिसे 'स्टीक भेड़ प्रबन्धन' (Precision Sheep Management PSM) कहते हैं। इस तकनीक से भेड़ों के समूह में सामान्तर ऊन व मांस का विकास होता है तथा बारिक व मजबूत रेशे वाली भेड़ अनुवंशिकी से भेड़ पालक की आर्थिकी मे वृद्धि होती है ।

2. 'स्टीक भेड़ प्रबन्धन' (Precision Sheep Management PSM) :- भेड़ों के समूह मे गुण-दोष पहचान कर उत्पादकता बढाने हेतू यह तकनीक आस्ट्रेलिया ने विकसित की है जिसके अन्तर्गत अच्छी किस्म की ऊन व मांस उत्पादन हेतू वैज्ञानिक तरीके से विकास किया जाता है। भेडों को 'Radio Frequency Tag' (RIFD) लगाये जाते हैं तथा भेडों के विभिन्न पहलुओं मे प्रगति साल के समय-समय पर एक कम्पयूटरीकृत कार्यक्रम द्वारा विश्लेशष कर अच्छे, सामान्य व कमजोर जानवरों की पहचान कर छंटाई की जाती है। इस कार्यक्रम हेतू कुछेक आधुनिक औजारों की आवश्यकता होती है जैसे कि :-

1. RIFD tags (FDX-B or HDX) : 16 अंक विशेष इलैक्ट्रोनिक पहचान न0।
2. Weigh Box & Load Bars: भेडों तथा ऊन के गुच्छों के वजन हेतू।

3.Panel Reader& Stick Reader: RIFD Tag को पहचान हेतू तथा भेड के विभिन्न पहलुओं की रिकार्डिंग हेतू।

4. Three Way Auto Drafter: रेस मे भेडों की गुणवता अनुसार छंटाई।

5. Software: विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण हेतू।

3. 'कृत्रिम गर्भाधान' (Cervical A.I.):- कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया से अच्छी नस्ल के मेढों का वीर्य एकत्रित कर भेडों मे बिना फ्रीज किये लगाया जाता है। इस तकनीक से जैसे अमूमन कुदरती मिलाप से एक मेढा एक सीजन में 100 के लगभग भेडों के साथ मिलान कर सकता है इस प्रकार इस तकनीक से 2000 भेडों को कृत्रिम गर्भाधान द्वारा टीके लगाए जा सकते हैं इस हेतू ट्रेनिंग के साथ साथ वीर्य पतला करने की प्रक्रिया, एक छोटी प्रयोगशाला व एक कृत्रिम गर्भाधान क्रेट की आवश्यकता होती है।

इस प्रक्रिया में भेड़ों की कोई काट-फाट नहीं होती है तथा यह प्रजनन की प्रक्रिया काफी हद तक प्राकृतिक होती है तथा सफलता दर भी 80 से 85 प्रतिशत होती है ।

4. दूरबीन से कृत्रिम गर्भाधान व भ्रूण प्रत्यारोपन (Laproscopic A.I. & Embryo Transplant) :- दूरबीन से कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया द्वारा जमाए गए टीके (Frozen Straw) एक छोटे सें आप्रेशन से भेड मे लगाए जाते हैं। इस आप्रेशन में एक भेड को केवल 5 मिनट ही लगते हैं तथा यह अच्छे नस्ल के मेढ़ों का वीर्य सुरक्षित एवं उपयुक्त समय पर भेड़ों में प्रजनन हेतु उपयुक्त है । भ्रूण प्रत्यारोपन के द्वारा गर्भित अंड़े को भेडों मे प्रत्यारोपित किया जाता है तथा इसके भी आप्रेशन की प्रक्रिया 5 मिनट की ही है। इस प्रक्रिया से अच्छी नस्ल के मादा व नर के गुण सफलता पूर्वक मेमनों में आते हैं जिससे अच्छी भेड़ अनुवंशिकी का विकास बडे पैमाने पर करना संभव है।

5. आस्ट्रेलिया मे ऊन के भाव तथा उन खरीद से विक्रय तक की कार्य प्रणाली :- ऊन को कटाई के समय में ही एक लाईसैंसधारी 'वूल क्लासर' द्वारा ऊन को श्रेणीकरण

किया जाता है तथा फार्म स्तर पर भेड की टुंडी मुंडी की ऊन अलग कर बाकि शरीर की ऊन श्रेणी अनुसार लगभग 200 किलोग्राम की गांठों मे पैक कर दिया जाता है तथा प्रत्येक गांठ पर वूल क्लासर का लाईसैंस न0 तथा ऊन की श्रेणी अनुसार मार्का लगा दिया जाता है।

भेड पालक ऊन को 'ऊन विपणन कम्पनीयों' को विक्रय हेतू पहुंचा देते हैं जहां पर ऊन की श्रेणी अनुसार प्रत्येक गांठ से 300-300 ग्राम नमूना निकाल कर प्रयोगशाला मे ऊन की मानकों का विश्लेषण जैसे कि रेज़े की मोटाई, उपज, वनस्पति पदार्थ, गुच्छे की ताकत, रंग व स्टाईल इत्यादि के लिए भेज देते हैं। रिपोर्ट आने उपरांत नमूने सहित ढेर को नीलामी हेतू नीलामी केन्द्र मे रख दिया जाता है जहां पर साप्ताहिक नीलामी की जाती है । प्राय: किसान को पिछले 3 माह नीलामी के दर तथा अगले 3 माह के प्रक्षेपित दर के आधार पर एक अनुमानित दर बारे सूचित किया जाता है। नीलामी के उपरांत 15 दिन के समय मे अपने हैंडलिग चार्ज जो कि लगभग 1.75 से 2 प्रतिशत होते हैं काट कर भुगतान कर देते हैं।

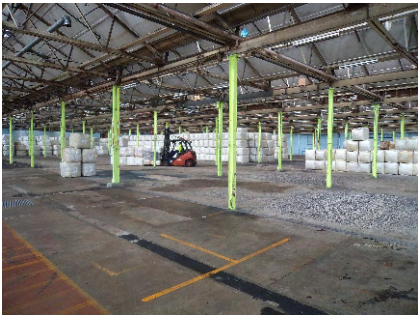

आस्ट्रेलिया ऊन साफ उपज के आधार पर 3 नवम्बर 2011 साप्ताहिक दर इस प्रकार से है:-

फाईन ऊन 17 से 18.5 माईक्रोन:	18 से 15 डालर (900 से 750 रूपये) प्रति किलो
मीडियम ऊन 19 से 20.5 माइक्रोन:	15 से 13 डालर (750 से 650 रूपये) प्रति किलो
स्ट्रोंग ऊन 21 से 23 माईक्रोन:	13 से 10 डालर (650 से 500 रूपये) प्रति किलो

नीलामी उपरान्त किसान को 'साफ उपज' के आधार पर नीलामित विक्रय दर अनुसार भुगतान कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसान की ऊन 700/- रू0 प्रति किलो विक्रय हो तो साफ उपज यदि 700 ग्राम है तो किसान को 700 ग्राम के हिसाब से भुगतान किया जाता है ।

आस्ट्रेलिया ने भेड़ व ऊन क्षेत्र में काफी ऊंचे आयाम स्थापित किये हैं तथा यह

उनकी अच्छी भेड़ अनुवंशिकी व प्रबंधन का नतीजा है इससे उन्होने न केवल भेड की ऊन को बेहतर किया है बल्कि भेड के मांस में भी काफी उन्नति की है। आस्ट्रेलियाई ऊन विश्व मे सबसे महंगी है तथा मांस की भी, खासकर मेमनो के मांस की अरब देशों में काफी मांग है। इन सभी प्रयासों से वहां के किसानों को अच्छा वित्तीय लाभ मिलता है जबकि वहां पर मजदूरों की बहुत कमी है । आम तौर पर देखा गया है कि 3 से 5 हजार भेडों वाले फार्मो को केवल 1 या 2 आदमी ही चलाते हैं जबकि अगर हिमाचल प्रदेश की तुलना करें तो यहां केवल 100 भेडो पर 1 या 2 आदमियों की आवश्यकता रहती है। भेड अनुवंशिकी के विकास हेतू उनके द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया 'स्टीक भेड़ प्रबन्धन' (PSM) के जरिये उन्होने भेड व ऊन के क्षेत्र मे स्टीक विकास किया है। आस्ट्रेलिया में भेड़ प्रबन्धन का तरीका काफी भिन्न है तथा भेड़ें किसानों द्वारा फार्मो में पाली जाती है । प्रत्येक फार्म को चारागाह विकास में भेड़ें चराने हेतु विभिन्न ब्लाकों में तारयुक्त बाड़ों में विभाजित किया जाता है । एक फार्म को लगभग इसे 15 से 20 ब्लाकों में विभाजित किया जाता है । 2-3 सप्ताह बाद भेड़ों के समूह को दूसरे बाड़े में चराने हेतु बदल दिया जाता है । इस प्रकार से चारागाह पर ज्यादा दवाब नहीं पड़ता है तथा जो चारागाह खराब हो जाते हैं उनमें 8-10 सालों बाद उन्नत किस्म के घास को भी रोपित किया जाता है । आदमियों की कमी के चलते भेड़ों के समूह को सम्भालने हेतु कुतों का प्रयोग किया जाता है जो कि समूह को इकट्ठा करना, एक बाड़े से दूसरे बाड़े में खदेड़ना इत्यादि का काम बहुत अच्छे तरीके से करते है । कुतों की यह नस्ल जो कि 'कैलोपी' कहलाती है का बहुत अधिक पैमाने पर प्रयोग किया जाता है तथा इन कुत्तों की बाजारी कीमत लगभग 2000 आस्ट्रेलियाई डालर (एक लाख रूपए) होती है ।